श्री सोमनाथ-संस्कृत-युनिवर्सिटी

राजेन्द्र भुवन मार्ग, वेरावल-३६२२६६(गुजरात)

श्रीसोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी IQAC, अनुस्नातक विभाग तथा युनिवर्सिटी सञ्चालित संस्कृत कॉलेज के संयुक्त तत्त्वाधान में आयोजित

ज्योतिष-विषयक राष्ट्रीय वेबिनार

वास्तुशास्त्रस्यालोके कक्षविन्यासः

दिनांक – ३१.०३.२०२१

प्रधानपरामर्शक

प्रो. गोपबन्धु मिश्र

कुलपति, श्रीसोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल

परामर्शक

डॉ. दशरथ जादव

कुलसचिव, श्रीसोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल

संयोजक

श्री नित्यानन्द-ओझा
सहायक आचार्य, ज्योतिष विभाग

सुश्री अपूर्वा अग्रवाल
सहायक आचार्या,ज्योतिष विभाग

आयोजक

डॉ. नरेन्द्रकुमार पंड्या
प्राचार्य, विश्वविद्यालय संचालित संस्कृत महाविद्यालय

डॉ. ललितकुमार पटेल
अध्यक्ष, अनुस्नातक विभाग एवं निदेशक- IQAC

पंजीकरण हेतु यहां क्लिक करें -

https://forms.gle/FUHBFWFwa7FDHnFU6

ज्योतिष-विषयक राष्ट्रीय वेबिनार

वास्तुशास्त्रस्यालोके कक्षविन्यासः

माननीय महोदय/महोदया,

नमस्कार! सुरम्य सौराष्ट्र प्रदेश में स्थित श्रीसोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत शास्त्रों एवं भाषा के पठन-पाठन हेतु सन् २००६ से निरन्तर कार्यरत है। शास्त्रों में उत्कृष्ट संशोधन को प्रोत्साहित करने हेतु विश्वविद्यालय समय-समय पर भारत के मूर्धन्य विद्वानों को आमन्त्रित कर परिसंवादों एवं संगोष्ठीओं का आयोजन करता रहता है।

वैश्विक महामारी के चलते विश्वविद्यालय संचालित संस्कृत महाविद्यालय, अनुस्नातक विभाग एवं IQAC के संयुक्त उपक्रम से दिनांक ३१.०३.२०२१ को "**वास्तुशास्त्रस्यालोके कक्षविन्यासः**" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया जा रहा है।

वस्तुतस्तु मानव जीवन को सुखमय एवं ऐश्वर्ययुक्त वनाने तथा पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि में वास्तुशास्त्रोक्त रीत्या निर्मित गृह की महत्वपूर्व भूमिका दृष्टिगोचर होती है। ज्ञातव्य है कि गृह के विना मानवीय कार्य - व्यवहार कितना जटिल है-

"गृहस्थस्य क्रियाः सर्वाः न सिध्यन्ति गृहं विना" – भविष्यपुराण

वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्यो के विविध सिद्धान्तों के आधार पर प्राचीन काल से ही मनुष्य सौन्दर्य युक्त गृहनिर्माण के साथ ही दिक् ,देश, और काल के अनुसार गृहनिर्माण की अनेक विधियों का सूत्रपात करता रहा है। वर्तमान में भी उन सिद्धान्तों पर निरन्तर शोध कार्य किये जा रहें हैं । गृह निर्माण में प्रकोष्ठादि का स्थापन अत्यन्त महत्वपूर्व विषय है। शास्त्रानुसार विभिन्न प्रकार के गृह जैसे निवासगृह, शैक्षणिक संस्थान, व्यवसायिक आदि गृहों में समुचित स्थानों पर निर्दिष्ट कक्षों के निर्माण से समस्त सुखों की प्राप्ति होती है।इसके साथ ही देवालयों में भी शास्त्र द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर देवी- देवताओं की प्रतिष्ठा अभीष्ट दायक होती है। गृहनिर्माण के इन सिद्धान्तों का ज्ञान और व्यवहार में इनका क्रियान्वयन समृद्धशाली समाज के निर्माण हेतु अत्यन्त आवश्यक है। अत एव इन्ही तथ्यों पर विचार-विमर्श तथा अपेक्षित व नवीन तथ्यों के सूत्रपात द्वारा वास्तुशास्त्र के जिज्ञासुओं के ज्ञान वर्धन व समाज में महत्वपूर्व योगदान हेतु यह वेविनार आयोजित किया जा रहा है जिसमें आपकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है।

इस वेविनार में प्रस्तोतव्य विषय निम्नलिखित हो सकते हैं-

- निवासगृह में कक्षविन्यास
- व्यवसायिक गृह में समुचित स्थान पर विभिन्न प्रकोष्ठों का निर्माण

- देवालयों में विभिन्न देवताओं के स्थापन हेतु समुचित स्थानों का निर्धारण
- किसी देवालय के सम्मुख अन्य देवालयों के निर्माण की व्यवस्था
- शैक्षणिक संस्थानों में कक्ष विभाजन
- विभिन्न प्रकार के गृहों में द्वार स्थापन व्यवस्था
- प्रासादों में कटि आदि अङ्गों का निर्धारण
- विभिन्न नगरों एवं ग्रामों का विन्यास
- वास्तुपुरुष का अङ्ग विभाजन

मुख्य विषय से सम्बद्ध अन्य विषयों में भी पत्र की प्रस्तुति की जा सकती है।

सूचना –

- इस वेबिनार में प्रतिभागी के रूप में शोध छात्र एवं प्राध्यापक भाग ग्रहण कर सकते हैं।
- इस वेबिनार में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करने के इच्छुक विद्वानों से निवेदन है, कि वे २८.०३.२०२१ तक निम्नलिखित गूगल लिंक पर अपना सामान्य विवरण देकर अपना पंजीकरण करेः – https://forms.gle/FUHBFWFwa7FDHnFU6
- पंजीकरण पत्र में अपने शोध पत्र का विषय तथा अतिसंक्षिप्त सार (१०० शब्दों में) भी प्रस्तुत करना होगा।
- इस वेबिनार में पंजीकरण निःशुल्क है।
- गूगल लिंक पर पंजीकरण मात्र करने से वेबिनार में पंजीकरण सुनिश्चित नहीं होगा। आप के शोध का विषय एवं शोधसार की प्रस्तुति के आधार पर वेबिनार के संयोजक आप को अपने पंजीकरण की सुनिश्चिति का ई-मेल भेजेंगे। इस ईमेल को पाने से ही आप का पंजीकरण सुनिश्चित होगा।
- वेबिनार 'वेबेक्स' (Cisco Webex) एप्लिकेशन द्वारा चलेगा। आपके ई-मेल में वेबिनार में जुडने हेतु लिंक भी भेजा जाएगा।
- इस वेबिनार में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्र E-ISBN से युक्त ई-पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये जाएँगे।
- शोध पत्र प्रस्तोताओं को ई-मेल द्वारा ई-प्रमाण पत्र भी भेजा जायेगा।
- शोध पत्र की प्रस्तुति संस्कृत/अंग्रेजी/हिन्दी में की जा सकती है।
- प्रतिभागियों को वेबिनार से पूर्व अपना सम्पूर्ण शोध पत्र jyotish.sssu@gmail.com पर युनिकोड में टाईप कर के भेजना अनिवार्य है।
- देवनागरी में लिखे हुए शोध पत्रों को एरियल युनिकोड (फोंट साईज १२) में तथा अंग्रेजी में लिखे हुए पत्रों को टाईम्स न्यू रोमन (फोंट साईज १२) में टाईप करना होगा।
- इस वेबिनार संबंधित से अधिक जानकारी के लिए संयोजकों का सम्पर्क यहाँ किया जा सकता है –

श्री नित्यानन्द ओझा – 7408049488 **सुश्री अपूर्वा अग्रवाल** – 8821815091